सांध्य-वन्दना

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी धा. द. केन्द्र)
क्रमांक 848

भगवान जोषी नाथ जी १९८२

ਨਿਤ-ਨੇਮ-ਪੋਥੀ

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय!!!

सांध्य – वन्दना

(गुरु महाराज के चरण कमलों में)

…शक :

श्री भगवान गोपीनाथ जी ट्रस्ट

…करयार (…खुरी यार.) श्रीनगर, कश्मीर

प्रथम संस्करण १९८० ई०   मूल्य : रु. १-५

BHAGWAN SHRI GOPINATH JI OF KASHMIR

"वन्दौं गुरुपद पद्म परागा"

(तुलसी)

भौतिक जीवन की इस मदान्ध तथा दिशाहीन दौड़ में मानव में मतिभ्रम होना स्वाभाविक है, परन्तु चिन्तन, मनन और भजन-कीर्तन की चिर-नवीन त्रिवेणी ने भारतीय मस्तिष्क और मन को सदा से सींचा है, अभिषिक्त किया है, हमारी इसी सनातन परम्परा ने घिरते हुये अज्ञान, अविद्या के बादलों में भी हमारी मेधा को भटकने से सुरक्षित रखा है, भजन-कीर्तन का यही मानसिक उबाल आत्मोन्नयन, आत्म-समर्पण तथा आत्म-लाभ का प्रथम सोपान माना गया है और यहीं से अध्यात्म की सीमा का शुभारम्भ होता है। जीवन में सोऽहम् मिठास पनप उठती है और भक्त तथा भगवान के बीच की दूरियाँ स्वतः घट जाती हैं, यही क्रमिक विलय भुक्ति और मुक्ति में भी सन्तुलन पैदा करके मानव के जीवन को सार्थक बनाता है। जभी तो भगवान स्वयं यह आदेश देते हैं:–

"मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।"

भक्त–समूह में विद्यमान भगवान की पहचान अर्जुन की तरह 'दिव्य-चक्षु' से सम्भव है, यह दैवी वरदान गुरु के अनुग्रह का अवश्यंभावी अमृत-फल है। भगवान गोपीनाथ ने इस दिव्य-दायित्व को पूर्णतया निभाया है और उन्हीं की कृपा के सुयोग्य पात्र बनने के लिये प्रस्तुत "सांध्य वन्दना" का चयन किया गया है। गुरु की अनुकम्पा ही भक्त की अमूल्य निधि होती है। बहुत समय से एक ही सूत्र में गुंथी गई 'आरती' का अभाव खल रहा था, अब श्री गोपी भगवान की सदिच्छा से श्री ओंकार जी चरन्गू ने इसे क्रमिक रूप देकर संकलित करने की दिशा में एक प्राणवान प्रयत्न किया है। उनके भक्त-बन्धु इसके लिये उनका आभार स्वीकारते हैं।

मुझे आशा है कि भगवान गोपीनाथ जी का दिनोदिन विपुल बनता हुआ परिवार इस 'आरती' से समुचित लाभ उठाकर अपने गुरु के प्रति अपना ऋण चुकाने में समर्थ हो सकेगा, इसके साथ ही विश्व-मेधा को यथोचित रीति से गुरु महाराज के दिव्य-सन्देश से अवगत भी करा सकेगा, व्यक्ति और समष्टि तब एक-स्वर और एक-हृदय होकर भगवान जी रूपी प्रकाशस्तम्भ के आलोक में अपनी असली पहचान कर पायेंगे ॥

दासानुदासः
क० न० दर
प्रधान
भगवान श्री गोपीनाथ जी ट्रस्ट,
श्रीनगर ।

कृष्णा-जन्माष्टमी
२-९-८०

सायंकालीन प्रार्थना समय	
दिसम्बर – जनवरी	6-15
नवम्बर—फरवरी	6-30
अक्टूबर—मार्च	6-45
सितम्बर - अप्रैल	7-00
अगस्त—मई	7-15
जुलाई -जून	7-30

'त्योहार'

भगवान श्री गोपीनाथ जी
महा—यज्ञ
मिती ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया

भगवान श्री गोपीनाथ जी
महा—जयन्ती
मिती आषाढ़ शुक्ल द्वादशी

Bhagwan Shri Gopi Nath Ji

OF

KASHMIR

(1898—1968)

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय

OM NAMO BHAGAWATE GOPINATHAYA

ओं श्री गणेशाय नमो नमः

१

१ ओं शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।

२ अभिप्रेतार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि ।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः ।।

३ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु र्गुरुः साक्षात्महेश्वरः ।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

४ अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

५ अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

६ नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम् ।
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये ।।

गुरु-स्तुतिः

ओं

१ नारायणात्मजं शान्तं हारमाल्योदरोद्भवम् ।
भक्तानां रक्षकं धीरं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

२ ब्राह्मणं ब्रह्म तत्वज्ञं जनसन्मार्ग दर्शकम ।
निष्कामकर्मिणं सन्तं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

३ अहर्निशं भक्ति योग प्राप्त शंकर दर्शनम् ।
अजपा जप संलग्नं गोपीनाथं नमाम्यहम ॥

४ जितेन्द्रियं जिताहारं सम लोष्ठाश्म कांचनम् ।
मायातीतं महात्मानं गोपीनाथं नमाम्यहम ॥

५ देह स्नान विनिर्मुक्तं मनः स्नान परायणम ।
सदात्म शुद्धि संयुक्तं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

६ ईश कृपाप्त विज्ञानमष्ट सिद्ध्यनुगं मुनिम् ।
भक्त दत्त नव निधिं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

७ गृहस्थमपि संन्यास व्रतिनं ब्रह्मचारिणम् ।
त्रिकालज्ञं गुणातीतं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

८ सिद्धासनस्थितं नित्यं प्रभुध्यान रतं बुधम् ।
परमेश्वर संलीनं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

९ ज्ञान गंगा जल स्नान धौत मानस किल्विषम् ।
विज्ञानिनामग्र गण्यं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

१० स्व करस्पर्श सद् भक्त भव भीति विनाशकम् ।
सर्वजनहिते रतं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

११ दृष्टि पातेन दुःखिनां रक्षतारं कृपानिधिम् ।
दुःखिभ्यः सुखदातारं गोपीनाथं नमाम्यहम ॥

१२ यज्ञ भस्म भक्त रोग हर्तारं शुद्ध चेतसं ।
रोग नाशकरं वैद्यं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

१३ देश संकट काले यः कृतवान् लोकरक्षणम् ।
तं देश रक्षकं वीरं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

१४ राक्षसानां विनाशाय सैनिकाः येन प्रेरिताः ।
सेनाध्वदर्शकं शूरं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

१५ पवित्रे स्वाश्रमे संस्थं भक्तानां काम पूरकम् ।
अवधूत दशापन्नं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

१६ काव्य पुष्पमयी पूजा गोपीनाथस्य पादयोः ।
कृता त्रिभुवनाख्येन शास्त्रिणा कृष्ण सूनना ॥

३

बब भगवान हरे

१ बब भगवान हरे जय जय बब भगवान हरे ।
पिता बब भगवान हरे ।
भक्ति भाव भक्त्यन पनन्यन
दास भाव दासन पनन्यन
प्रथ बिज़ि करू अनुग्रेह,जय जय बब भगवान हरे ॥

२ कीर्तन युस हा करि पज़ि मन,
छ्यन गछ़ि मोह ज़ाल निश
बबा छ्यन गछ़ि मोह ज़ाल निश
च़न सयि मंज़ मूल्य सुय बनि,
च़न सयि मंज़ मूल्य सुय बनि
नाव चोनुय युस स्वरे ॥ जय जय०

३ मोल मअज्य सोनुय छुख हा च़यि,

आय असि च़ेय शरणय
बबा आय असि च़ेय शरणय
परनअय पनन्यन तल रछ,
पादन पनन्यन तल रछ
असि संकटनि गरे ॥ जय जय०

४ आवागमन च़टू सोनुय,
च्योनुय छु मनि मंज़ हा लोल
बबा चोनुय छु मनि मंज़ हा लोल
होल गोमुत छु असि सतगुरू,
होल गोमुत छु असि टाठि गुरू
घ्योन दूर्यर कुस ज़रे ॥ जय जय०

५ पूरअ यूगच हा सुमरण फिरान,
नूर बोरमुत छु नुन्द हा बोन
बबा नूर बोरमुत छु नुन्द हा बोन
सूर चानि दोनि हुन्द छु औषध,
सूर चानि दोनि हुन्द छु औषध
बअनि यस मा सु मरे ॥ जय जय०

६ सास सिरियुक हियु छुय बजर,
आसवुन अजर अमर हा च़यि
बबा आसवुन अजर अमर हा च़यि
भास मनि मंज़ प्रत्यक्ष असि वोन
भास मनि मंज़ प्रत्यक्ष असि वोन
पोश लागोय लोलरे ॥ जय जय०

७ यस दया आसि चआनि बबा,
पोरि कति तस यम हा दूत
बबा पोरि कआति तस यमदूत
भूत प्रेत तसरुफ़ इत्यादिक
भूत प्रेत तसरुफ इत्यादिक
सआरीय गछन बांबरे ॥ जय जय०

८ रोज़ि अमर सुति हा छेस्क,
यस कल्यान बनि हा चोनुय
बबा यस कल्याण बनि चोनुय
चानि प्रभाव तस ब्रोंठ कनि,
चानि प्रभाव तस ब्रोंठ कनि

वछ़ुत अदुय कांह म्रा दरे ।। जय जय०

९ पाप शाप असि हा पापियन गाल,
वाल पृथ्वी प्यठ हा बोर
बबा, वाल पृथ्वी प्यठ हा बोर
मअरि संसार क्यव वेशयव,
मअरि संसार क्यव वेषयव
हृदयस मंज़ च़ असि बेह ।। जय जय०

१० शूलहर योगीश्वर सन्त,
सोन भविनय स जय जय कार
बबा, सोन भविन्य चे़ जय जय कार
वील ज़अरी बोज़ सन्मुख,
वील ज़अरी बोज़ सन्मुख
रोज़ सन्तुष्ट गरि गरे ।। जय जय०

११ गोपीनाथ आश्रम हा चोन,
वैखुरीयार शोल मारान
बबा, वैखुरीयार शोल मारान
प्रारान भक्त दर्शनस अऽस,
प्रारान भक्त दर्शनस अऽस
बब, हा पादन तल वरे ।। जय जय०

१२ चानि समग्रज़ हंज़ बुनियाद,
आश्रम स्य मंज़ हा लज्य
बबा, आश्रम स्य मंज़ा हा लज्य
च़ग्रजि सग्र दुर्गत त ग्रह पीडा,
च़ग्रजि सग्र दुर्गत त ग्रह पीडा
भक्त्यन सारिनय गरे ॥ जय जय०

१३ दीवान मसरूर दासव,
मंज़ हा दासा अख छु चोन
बबा, बग्रति दासा अख हा चोन
मोन भवसर तरि सुय युस,
मोन भवसर तरि हा सुय युस
आरती चाञ न्यथ करे ॥ जय जय०

१४ बब भगवान हरे, जय जय बब भगवान हरे
पिता बब भगवान हरे
भक्ति भाव भक्त्यन पनन्यन,
दास भाव दासन पनन्यन
ग्रथ विज़ि करू अनुग्रह,
जय जय बब भगवान हरे ॥

४

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

ओं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओं

५

५ मिन्ट के लिये भगवान जी के ध्यान में मौन तथा भगवान जी के नाम का जाप।

ओं ओं ओं

६

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय

●

१ भाव सान लोला भरिव सद्गुरुसयि
भगवान बबसयि करिव प्रणाम।
भाव सान लोला भरिव सद्गुरुसयि
भगवान बबसयि करिव प्रणाम।

२ ज़न्मा दोर तम्य हार ज़ून पछिसयि
त्यथ अअस बाह ब्ययि शुक्रवार।
१८६८ ईस्वी सन् सयि
भगवान बबसयि करिव प्रणाम॥

३ हारमाल माता आयि उलसनसयि
नारायण बबनय बोर क्याह लोल
मान तम्य कअरनय सूल्य सिद्धार्थसयि
भगवान बबसयि करिव प्रणाम॥

४ बाल क्रीड़ा करन बानमहल प्रान्तसयि
घरसयि मंज़ तस ओस वैराग।
त्यागिथ सोरुय छाँडान शिवसयि
तस त्याग शीलसयि करिव प्रणाम॥

५ जायि जायि छाँडान ओस सद्गुरुसयि
कर दियम दर्शुन बन्यम अनुग्रह।

अभिलाष पूर गव तस साधुशीलसयि
तस निष्कामसयि करिव प्रणाम ॥

६ साफा बवस ओस प्यठ मस्तकसयि
तनि प्यठ फच़रना ओस शूभान।
सोऽहं सोऽहं बवस ओस मनसयि
तस स्थिर मनसयि करिव प्रणाम ॥

७ दोहन त रञच़न लगिथ उपवाससयि
केवल चिलमा अऽस ज़ोतान।
ॐ शब्द मोहरा बवस प्ययि मनसयि
तस अवधूतसयि करिव प्रणाम ॥

८ शुद्ध मन भक्ति-भाव लगान यज्ञसयि
धून्या ब्रोंठकनि शोल मारान।
देवता ति प्रारान हवन भाग्यसयि
तस याग शीलसयि करिव प्रणाम ॥

९ आव यलि संकट कश्यप प्रान्तसयि
योगाग्नि सञ्त्यन तथ करुन ग्रास।
अद्वैत अऽसिथ लगिथ कर्मयोगसयि
योगाभ्यासस्यि करिव प्रणाम ॥

१० खबरा न्यबर गयि कश्मीर प्रान्तसयि
गोपी भगवान गयि निर्वान।
निर्लोभ निष्काम सायंकालसयि
ध्यानीश्वरसयि करिव प्रणाम॥

११ ज़्येठ द्वयि मंगलवारि ज़ूनयपछ़िसयि
मृगशिर तारा ओस चमकान।
१९६८ संवत्सरसयि
निर्वाण शीलसयि करिव प्रणाम॥

१२ भक्त आय लारान तोत हा दर्शनसयि
अशि कञि मोक्तय अऽसि हारान।
आरती लोल सान कञरख योगीश्वरसयि
ब्रह्म स्वरूपसयि करिव प्रणाम॥

१३ क्याह करन कर्म तस कर्मातीतसयि
हृदयस मंज़ यस आसि सोऽहम।
ज्योति. गयि मीलिथ ज्योतिस्वरूपसयि
जीवन मोक्तसयि करिव प्रणाम॥

१४ कति अऽसि धन त यार तस निर्लोभसयि॥
लक्ष्मी ब्रोंठकनि करान तस वास।

कर कर्यम कृपा दियम म्य दानसयि
तस दानशीलसयि करिव प्रणाम ॥

१५ पीठा वुजक्यन तस पीठीश्वरसयि
वैखुरी यारय क्याह शूबान ।
कृपा बबसंज़ विश्व - मंडलसयि
भगवत रूपसयि करिव प्रणाम ॥

१६ वर्णन क्याह करव तस गुणातीतसयि
युस ओस निर्लोभ ब्यथि निर्गुण ।
नमो नमः बबसन्दिस गुप्तै तपसयि
कर्मातीतसयि करिव प्रणाम ॥

१७ गुरु संज़ अस्तुति स्वरि युस मनसयि
तस कति पोरिय यम सुन्द भय ।
केंह न स तअर छुय यति हा मुकलनसयि
भगवान बबसयि करिव प्रणाम ॥

भाव सान लोला भरिव सद्गुरुसयि
भगवान बबसयि करिव प्रणाम ॥

७

गुरु-वन्दना

१ जय दक्षिणा मूर्ति ॐ गुरु जय दक्षिणा मूर्ति
करत अनुग्रह शिष्यवर्ग पर,
करत अनुग्रह शिष्यवर्ग पर, फैली जग कीर्ति
हरि ॐ जय दक्षिणा मूर्ति

२ दृष्टिपात, संकल्प मात्र से, जगती कुण्डलिनी
स्वामी, जगती कुण्डलिनी
क्रियावती क्रीडाएँ करती
क्रियावती क्रीडाएँ करती, जाये न जो बरनी
हरि ॐ जय दक्षिणा। ०।

३ षटचक्रों को बेध उर्ध्व गती प्राणों की होती
स्वामी, प्राणों की होती
दिव्य मौन उपदेश जगाता
दिव्य मौन उपदेश जगाता, निष्ठा की ज्योती
हरि ॐ जय दक्षिणा। ०।

४ निर्मल मन निष्काम भाव से शक्ति को ध्यावे

स्वामी, शक्ति को ध्यावे
ब्रह्मधाम कर प्राप्त
ब्रह्मधाम कर प्राप्त छूट भव-बन्धन से जावे
हरि ओं जय दक्षिणा।०।

५ करिय कृपा गुरुदेव, दास को अटल भक्ति दीजे
स्वामी अटल भक्ति दीजे
भुक्ति-मुक्ति कर दान दीन को
भुक्ति-मुक्ति कर दान दीन को पूर्ण काम कीजे
हरि ओं जय दक्षिणा।०।

६ प्रतिपल प्रीति बढ़े चरणों में हो न कभी तृप्ति
स्वामी हो न कभी तृप्ति
सात्विक भाव बढ़े क्षण क्षण में
सात्विक भाव बढ़े क्षण क्षण में बढ़े ज्ञान दीप्ति
हरि ओं जय दक्षिणा।०।

७ जिनके दृढ़ विश्वास चरण तजि, आश नहीं दूजी
स्वामी आश नहीं दूजी
निश्चय बनि अधिकारी
निश्चय बनि अधिकारी, पावे महायोग-पूंजी

हरि ओं जय दक्षिणा।०।

८ गुरुपद पद्म पराग सुअंजन जो नयनन आंजे
स्वामी जो नयनन आंजे
दिव्य दृष्टि कर प्राप्त,
दिव्य दृष्टि कर प्राप्त, तापत्रय अर्धनिमिष भांजे
हरि ओं जय दक्षिणा।०।

९ कैसे करें प्रार्थना गुरुवर, हम सब अज्ञानी
स्वामी हम सब अज्ञानी
स्वयंसिद्ध शुभ साधन दीजे
स्वयंसिद्ध शुभ साधन दीजे, श्री गुरु विज्ञानी
हरि ओं जय दक्षिणा।०।

१० जय दक्षिणा मूर्ति ओं गुरु जय दक्षिणा मूर्ति
करत अनुग्रह शिष्यवर्ग पर
करत अनुग्रह शिष्यवर्ग पर, फैली जग कीर्ति
हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति ॥

८

१ ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार

२ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार
३ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार
४ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार
५ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार
६ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार
७ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार
८ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार
९ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार
१० ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
युस हा परि तस हा लगि बवसर तार

कठिनिस सम्अदरस तार दिनम्अ खम्अतरय
सतगुरु च़यि छुख ज़गि महशूर
अज्ञान मलकव नाव सम्अनि गिरमच़
ज़गतगुरु सम्अनि नाव तार सम्अ अपोर।
कठिनिस सम्अदरस तार दिनम्अ खम्अतरय
सतगुरु च़यि छुख ज़गि महशूर
अज्ञान मलकव नाव सम्अनि गिरमच़
ज़गतगुरु सम्अनि नाव तार सम्अ अपोर।
कठिनिस सम्अदरस तार दिनम्अ खम्अतरय
सतगुरु च़यि छुख ज़गि महशूर
अज्ञान मलकव नाव सम्अनि गिरमच़
ज़गतगुरु सम्अनि नाव तार सम्अ अपोर॥

बोल सतगुरु महाराज की जय
बोल ज़गतगुरू भगवान गोपीनाथ महाराज की जय
बोल सांचे दरबार की जय
नमः पार्वती पते

हर हर महादेव

भजन

बजर पादन हन्ज़ि गर्दि हुन्द कामि अक्य न ज़ोनुय
अजर–अमर भगवान बब छुख आसवोनुय,
हजर अच्छरन हुन्द कर्मस छुख कासवोनुय
अजर–अमर भगवान बब छुख आसवोनुय ॥

दया सागर ही दयालू भिछना दनेय
पादन चान्यन हन्ज़ कृपा ध्यव असि ति बने,
छुय सोन प्रणाम बारम्बार पादन च्य सोनुय ॥०॥

हे गोपीनाथ ! लोलसान पोश लागोय शेरे
भाव नागरादस प्रेम चान्युक अमृत फेरे,
दऽय चलि मनस च्य सनमोख छुख भासवोनुय ॥०॥

दिच़थ च्य मान्यता यूग द्रष्टि सतीय संतन त साधन
प्राण अपानच ज्ञान करनाव गोश थाव नाघन,
पानन सान्यन लोल अमृत न्यथ दित चोनुय ॥०॥

बब सोन चृथ छुख लोल खास्यन फिर असि क्युत मोय
तशनलभ यच़ छिय गुल्य गन्डिथ असि करान च्यय कुन जय,
शब रोज़ ज़डन त ज़ीवन मन्ज़ छुख भासवोनुय ॥०॥

दीनन अनाथन वन्य बबा कैंहछा चृय यार
आमत्य शरण च्येय पादि कमलन तल छिय वनान ज़ार,
सीनन सान्यन प्यठ यि ओंमकार गछि खनोनुय ॥०॥

पय लोग चोनुय छुय च्य वैकुण्ठ पदवी प्यठ जाय
ज़य असि च्यय सीत्य छुय गामच़ कर सोन उपाय,
दय छुख निराकार आरत्यन छुय आसर चोनुय ॥०॥

नाव सान्य यीरान छ्य कठिनिस दोख सागरस मंज़
अथ़ बाल लागनच, हन्ज़ बनिथ च कर पानय संज़,
आवलनिस मंज़ अस्य ति दामान रटिथ छि चोनुय ॥०॥

शुय चान्य प्रथ कुनि देशस मंज़ गुण छिय ग्यवान
मशख किथ पाठय ख्यन-ख्यनय याद छुहख प्यवान,
कश्मीर मंडलस मंज़ खरयार आश्रम छु चोनुय ॥०॥

ही, ब्यन, गुलाब, ब्यल त मादल पूज़ायि लागोय
रूह सोन छुय च्यय सतीय आश्रमसय मंज़ अस्यति ज़ागोय,
द्रिय चानि खावि हन्ज़ छि लोल हमान छु न असि चोनुय ॥०॥

तिम नेत्र कमल च्यअन्य पंपोश ही शोभायमान
यिम द्रष्टि सअती मकल्यन छिय दिल चूरि निवान,
दिम तिछ म्य शक्ती युथ मनस मंज़ बन्यम वास चोनुय ॥०॥

"देवानि मसरूर" गीत चअनी ब लेखान रोज़य
सरखम करिथय पादन तल प्रणाम सोज़य,
वर्णन गुण चअनि कर कलमस ब दप लेखोनुय ॥०॥

●

Printed at : Fine Art Press, Habba Kadal, Srinagar.